शिखरिणी

लक्षण :— रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
6 11

अर्थ :— इस शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु और एक गुरु होते है तथा कुल वर्ण 17 होते हैं। पाद के 6वें वर्ण तथा अन्तिम 11वें वर्ण पर यति होती है।

उदा० — अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
ISS SSS III IIS SII IS
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम् ।
ISS SSS III IIS SII IS

अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
ISS SSS III IIS SII IS

न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥
ISS SSS III IIS SII IS

लय [ननाना नानाना, ननन ननना नानन नना]

मृच्छकटिकम्

Name :- Soni Kumari
Class :- B.A. part
Sub — Sanskrit

तृतीय अंक की कथावस्तु

'मृच्छकटिकम्' के तृतीय अंक का नाम 'सन्धिच्छेद' है। सन्धिच्छेद का अर्थ होता है सेंध लगाना अर्थात् चोर कर्म। इस अंक में शर्विलक चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर चोरी करता है इसलिए इसका नाम 'सन्धिच्छेद' नाम पड़ा। शर्विलक अपनी प्रेमिका तथा वसन्तसेना की दासी 'मदनिका' को दासता से मुक्ति दिलाने हेतु चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के रखे हुए आभूषणों को चुराकर ले जाता है। चारुदत्त की पत्नी 'धूता' अपने पति को लोकापवाद से बचाने हेतु उन आभूषणों के बदले 'रत्नमाला' देती है जिसे लेकर विदूषक वसन्तसेना को दे देता है।

तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में चारुदत्त का चेट मंच पर आता है। मध्यरात्रि का समय है। चारुदत्त घर नहीं लौटे हैं अतः चेट चिन्ता व्यक्त करता है।
द्वितीय दृश्य में चारुदत्त और मैत्रेय रेभिल के घर से संगीत सुनकर लौटते हैं। संगीत की प्रशंसा करते हैं और सो जाते हैं।
तृतीय दृश्य में शर्विलक वसन्तसेना की दासी मदनिका को गुलामी से छुड़ाने के लिए चारुदत्त के घर में सेंध लगाता और चोरी करने जाता है जहाँ विदूषक वसन्तसेना का आभूषण हाथ में लिए हुए सोया हुआ है और नींद में वह बड़बड़ा रहा है। वह ~~नींद~~ नींद में शर्विलक को चारुदत्त समझकर कहता है कि यह आभूषण आप ही ~~रख~~ रख लें क्योंकि यह मुझसे नहीं संभलेगा। शर्विलक इस मौके का फायदा उठाकर गहने लेकर चला जाता है।

चतुर्थ दृश्य में रदनिका और मध्यानी हैं। चारुदत्त और विदूषक जागते हैं। विदूषक की मूर्खता से आभूषण चोरी हो गई है फिर भी चारुदत्त कुछ नहीं बोलता है। चारुदत्त की पतिव्रता भार्या धूता निज पति को कलंक से बचाने के लिए अपना एकमात्र बहुमूल्य रत्नहार भेजती है और उसे लेकर विदूषक वसन्तसेना के घर प्रस्थान करता है।

तृतीय अंक समाप्त

Name :- Soni Kumari
class :- B.A. II year
Deptt — Sanskrit

मृच्छकटिकम्

तृतीय अंक की कथावस्तु

मृच्छकटिकम्' का तृतीय अंक का नाम 'सन्धिच्छेद' है। सन्धिच्छेद का अर्थ होता है सेंध लगाना अर्थात चोरी करना। इस अंक में शर्विलक चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर चोरी करता है इसलिए इसका नाम 'सन्धिच्छेद' नाम का। शर्विलक अपनी प्रेमिका तथा वसन्तसेना की दासी 'मदनिका' को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के रखे हुए आभूषणों को चुराकर ले जाता है। चारुदत्त की पत्नी 'धूता' अपने पति को लोकापवाद से बचाने हेतु इन आभूषणों के बदले 'रत्नमाला' देती है जिसे लेकर विदूषक वसन्तसेना को दे देता है।

तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में चारुदत्त का चेट मंच पर आता है। मध्यरात्रि का समय है। चारुदत्त घर नहीं लौटे हैं। अतः चेट चिन्ता व्यक्त करता है। द्वितीय दृश्य में चारुदत्त और मैत्रेय रेभिल के घर से संगीत सुनकर लौटते हैं। संगीत की प्रशंसा करते हैं और सो जाते हैं। तृतीय दृश्य में शर्विलक वसन्तसेना की दासी मदनिका को गुलामी से छुड़ाने के लिए चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर और चोरी करने जाता है जहाँ विदूषक वसन्तसेना का आभूषण हाथ में लिए हुए सोया हुआ है और नींद में बड़बड़ा रहा है। वह ~~[illegible]~~ नींद में शर्विलक को चारुदत्त समझकर कहता है कि यह आभूषण आप ही ~~[illegible]~~ रख लें क्योंकि यह मुझसे नहीं संभलेगा। शर्विलक इस मौके का फायदा उठाकर गहने लेकर भाग जाता है।

चतुर्थ दृश्य में रदनिका और आ जाती है। फिर चारुदत्त और विदूषक जागते हैं। विदूषक की मूर्खता से चोरी हो गई है, फिर भी चारुदत्त कुछ नहीं बोलता है। चारुदत्त की पतिव्रता भार्या धूता पति को कलंक से बचाने के लिए अपना एकमात्र बहुमूल्य रत्नहार भेजती है और उसे लेकर विदूषक वसन्तसेना के घर प्रस्थान करता है।

तृतीय अंक समाप्त